

## कामदा एकादशी कथा in Hindi

पौराणिक कथा के अनुसार, भगवान श्रीकृष्ण ने धर्मराज युधिष्ठिर को कामदा एकादशी के व्रत की कथा सुनाई थी। इस कथा के अलावा, भगवान राम के पूर्वज राजा दिलीप ने भी कामदा एकादशी का महत्व और कथा गुरु वशिष्ठ से सुनी थी।

कथा

प्राचीन काल में, पुंडरीक नाम का एक राजा राज्य करता था। वह भोंगीपुर नगर में रहता था। राजा प्रजा की परवाह नहीं करता था और हमेशा भोग-विलास में मग्न रहता था। उसी के राज्य में ललित और ललिता नाम का एक दंपति रहता था, जो एक-दूसरे से बहुत प्यार करते थे। ललित राजा के दरबार में संगीत सुनाता था। एक दिन, जब ललित राजा की सभा में संगीत सुना रहा था, उसका ध्यान अपनी पत्नी की ओर चला गया और उसका स्वर बिगड़ गया। यह देखकर राजा पुंडरीक क्रोधित हो गया। क्रोध में आकर उसने ललित को राक्षस बनने का श्राप दे दिया। राजा के श्राप से ललित मांस खाने वाला राक्षस बन गया।

अपने पति की यह दशा देखकर ललिता बहुत दुखी हुई। उसने अपने पति को ठीक करने के लिए हर किसी से उपाय पूछे। अंततः, थक-हारकर वह विंध्याचल पर्वत पर श्रृंगी ऋषि के आश्रम पहुंची और ऋषि को अपनी पूरी व्यथा सुनाई। ऋषि ने ललिता को कामदा एकादशी का व्रत करने की सलाह दी।

ऋषि ने ललिता को कामदा एकादशी के व्रत की महिमा बताई और उसे इसे आचरण करने का सुझाव दिया। ललिता ने ऋषि के निर्देशानुसार शुक्ल पक्ष में कामदा एकादशी का व्रत रखा, और भगवान विष्णु की आराधना करते हुए सम्पूर्ण विधियों से पूजन किया। द्वादशी के दिन पारण करके उसने अपना व्रत समाप्त किया।

भगवान विष्णु की अनुकंपा से उसके पति को पुनः मानव योनि प्राप्त हुई और वह राक्षस योनि से मुक्त हो गए। इस प्रकार, दोनों ने सभी प्रकार के कष्टों से मुक्त होकर सुखी जीवन व्यतीत करना शुरू किया और अंततः भगवान श्रीहरि के भजन-कीर्तन में लीन होकर मोक्ष की प्राप्ति की।

## **Kamada Ekadashi Vrat Katha in English**

**According to ancient legends, Lord Krishna narrated the story of Kamada Ekadashi Vrat to Dharmaraja Yudhishtira. Apart from this, King Dilip, an ancestor of Lord Rama, also heard about the significance and story of Kamada Ekadashi from his guru, Sage Vashishta.**

### **The Story**

**In ancient times, there was a king named Pundarik who ruled a kingdom. He resided in a city called Bhogipur. The king was indifferent to the well-being of his subjects and was always engrossed in luxury and pleasure. In his kingdom lived a couple named Lalit and Lalita, who were deeply in love with each other. Lalit served as a musician in the king's court. One day, while performing in the royal assembly, his thoughts wandered towards his wife, and his musical notes faltered. Noticing this, King Pundarik became furious. In his anger, he cursed Lalit, turning him into a demon who fed on flesh.**

**Witnessing her husband's misfortune, Lalita was heartbroken. Desperate to restore him to his original form, she sought advice from everyone she encountered. Ultimately, after exhausting all options, she arrived at the hermitage of Sage Shringi in the Vindhya mountains and narrated her sorrowful plight to the sage. Sage Shringi advised Lalita to observe the Kamada Ekadashi Vrat.**

**The sage explained the great significance of Kamada Ekadashi and encouraged her to follow it. Following the sage's instructions, Lalita observed the Kamada Ekadashi Vrat during the Shukla Paksha (waxing phase of the moon), offering her prayers to Lord Vishnu and performing the rituals with devotion. On Dwadashi, the**

**day following Ekadashi, she completed her fast by performing Parana (the ritualistic conclusion of a fast).**

**Through Lord Vishnu's grace, her husband regained his human form, freeing him from the demonic state. Both of them were liberated from their sufferings, began to live a peaceful life, and eventually attained salvation by devoting themselves to the worship and praise of Lord Vishnu.**